वर्ष - 5 अंक - 17

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

संपादक - विराग शास्त्री, देवलाली

प्रबंध संपादक
श्रीमति स्वस्ति जैन
देवलाली

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुंबई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनील भाई जे. शाह भायंदर, मुंबई

संपादकीय

प्यारे बच्चो ! नये वर्ष पर आपको जय जिनेन्द्र के साथ बहुत सारी षुभकामनायें। आषा है आपने नये वर्ष पर अच्छे – अच्छे कार्य करने का संकल्प लिया होगा। वर्तमान समय में हम सब जीवों की आयु कम होती जा रही है और इच्छायें बढ़ती जा रहीं हैं। पहले के समय में सैंकड़ों – हजारों वर्ष की आयु वाले लोग होते थे परंतु उनकी इच्छायें सीमित होती थीं, पाप भी कम होते थे। आज जब आयु 60 – 70 वर्ष रह गई है तो पाप के कार्य बढ़ते जा रहे हैं। चारों तरफ अनाचार, पाप, व्यसन दिखाई पड़ रहे हैं ऐसे समय में अपने को इनसे बचाना बहुत कठिन हो गया है। परंतु हम ऐसे दोस्तों की संगति से बचना होगा जिससे हमारा छोटा सा जीवन षांतिमय और देव–षास्त्र–गुरू की आराधना में व्यतीत हो।

ये हमारा महान सौभाग्य है कि हमें वीतरागी देव–षास्त्र–गुरू मिले वरना हम भी कुदेवों की पूजा करते हुये दुःखी भी होते और पाप भी करते। आपके माता–पिता ने आपको जिनधर्म के संस्कार दिये हैं, उनकी पूरी विनय करना। जिनधर्म के संस्कार ही जीवन का खजाना है। धन की विरासत तो किसी को भी मिल जाती है परंतु जैन धर्म के संस्कार मिलना दुर्लभ है।

इस बार का अंक आपको नये रूप में दे रहे हैं। अगला अंक पुनः पुस्तक के रूप में आयेगा। बुरा मत मानना। अब बातें बहुत हो गईं आप एक बार फिर अपनी प्यारी चहकती चेतना का नये रूप में आनंद लीजिये।

आपका ही
विराग

भक्त कवि-बनारसी दास

बादषाह षाहजहाँ पं. बनारसीदासजी के साथ षतरंज खेला करते थे। पण्डितजी का नियम था कि – मैं जिनेन्द्र भगवान को अतिरिक्त किसी को नमस्कार नहीं करूँगा। बादषाह को इनके नियम का पता चला तो मजाक में इन्हें राजदरबार में बुलाया। षाहजहाँ स्वयं ऐसे स्थान पर बैठे जहाँ का एक द्वार बड़ा था और उसमें एक छोटा द्वार था। बड़ा द्वार बंद था। छोटा द्वार खुला था पर इतना छोटा था कि उसमें से निकलने के लिये झुकना जरूरी था। राजा ने सोचा कि पण्डितजी जब अंदर आयेंगे तो सर झुकाकर ही अंदर आना पड़ेगा। चतुर कविवर ने जब देखा कि बड़ा द्वार बंद है तो पहले वे द्वार पर नीचे बैठ गए फिर द्वार में पहले पैर डाले और फिर सिर निकालकर अंदर प्रवेष किया। इस प्रक्रिया में उन्हें झुकना नहीं पड़ा। बादषाह कवि चतुराई से प्रसन्न होकर बोले – कविराज ! क्या चाहते हो? इस समय जो माँगोगे वह अवष्य मिलेगा।

कवि ने कहा– जहाँपनाह ! मैं यह चाहता हूँ कि आज के पष्चात् फिर कभी दरबार में न बुलाया जाये।

बादषाह वचनबद्ध होने से बहुत दुःखी हुए और कई दिन तक दरबार में नहीं आए। इधर कविवर जगत से एकाकी होकर अपने स्वाध्याय, चिन्तन और आत्मध्यान में लग गए। बनारसीदासजी की प्रमुख रचनाएं हैं – नाम माला, नाटक समयसार, बनारसी विलास, अर्द्धकथानक, मोह विवेक युद्ध, मांझा, आदि। ऐसे थे हमारे पंडित बनारसीदास जी।

ऋषभ जैन, कानपुर

आदि प्रभु ऋषभ ने किया, अनोखा काम।
जन्म मरण का अंत कर, ऋषभ बनो भगवान।

षची पिंकेष बोटादरा
घाटकोपर, मुम्बई

षची अप्सरा सी प्यारी हो, बुद्धि तेरी अपार।
जिन षासन संतान हो, रखना कदम विचार।।

क्षितिज जैन,
भायंदर, जि. थाणे महा.

भोली मुद्रा है "क्षितिज", हो वीर प्रभु संतान।
जैन धर्म श्रद्धान से, जीवन बने महान।

वीनस जैन
भायंदर, जि. थाणे महा.

जन्म दिवस है देह का, तू तो आतमराम।
"वीनस" ऐसा कार्य करो, बनें सिद्ध भगवान।

मानसी जैन
भायंदर, जि. थाणे महा.

मन निर्मल हो "मानसी", कार्य करो तुम अपार।
सुख आनंद सदा मिले, जिन धर्म ही सार।

Tiyaan Kini *Trisha Kini*
Grandson & Grand Daughter
Poorinima Ullas Jobalia
Mumbai

यह फोटो है श्री गोपाल अययर की। मध्यप्रदेष के भोपाल षहर में एक कार दुर्घटना में एक लोहे का सरिया इनकी छाती से आर–पार हो गया। डॉक्टरों के लगभग 6 घंटों तक किये गये प्रयासों से इनकी जान बच गई। जिस जीव का आयु षेष है तो उसे इन्द्र भी नहीं मार सकते और जिसकी आयु समाप्त हो गई हो उसे कोई भी ताकत बचा नहीं सकती ।

निज आयु क्षय से मरण हो,
यह बात जिनवर ने कही।
निज आयु से जीवित रहें,
यह बात जिनवर ने कही।

मुमुक्षु परिवारों के विवाह सम्बन्धों के लिये मुमुक्षु मंडप का प्रकाशन

मुमुक्षु परिवारों के विवाह सम्बन्धों को सरल बनाने के उद्देष्य से यंग जैन प्रोफेषनल्स, इंदौर एवं सर्वोदय ज्ञानपीठ जबलपुर द्वारा मुमुक्षु मंडप पत्रिका का प्रकाषन किया जा रहा है। इसमें फार्म भेजने की अंतिम तिथि 28 फरवरी है। विषेष जानकारी आप इन नम्बरों से प्राप्त कर सकते हैं–9827685456, 8085724418, 8796801361 ।

प्रति, ____________________

____

____

____

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक आचार्य कुन्द–कुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर (म.प्र.)

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
चहकती चेतना, बंगला नं. 50, बेलतगांव रास्ता, लाम रोड, पोस्ट देवलाली,
जिला – नासिक, महा.– 422 401 मोबा. : 9373294684, 9423212084
e-mail : chehaktichetana@yahoo.com

आप चहकती चेतना पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1920000000106 में सदस्यता और सहयोग राशि जमा कर हमें सूचित कर सकते है ।

हमारे तीर्थक्षेत्र

नैनागिरि

मध्यप्रदेष के कानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर सागर से 56 किमी की दूरी स्थित नैनागिरी पावन सिद्धक्षेत्र है।

यह लगभग 2900 वर्ष पुराना पवित्र तीर्थ है। यहाँ से मुनिन्द्रदत्त, इन्द्रदत्त, वरदत्त, गणदत्त और सायरदत्त मुनिराजों ने तपपूर्वक मोक्ष प्राप्त किया। यहाँ तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्ष्वनाथ का समवषरण आया था। यहाँ पहाड़ पर 38 और नीचे तलहटी में 13 जिनमंदिर हैं। पहाड़ के लिये मात्र 50 सीढ़ियाँ चढ़ना पड़ती हैं। यहाँ भगवान पार्ष्वनाथ की विषाल खड्गासन प्रतिमा है। नैनागिरी के समीप बम्हौरी के श्री ष्यामलेजी को आये स्वप्न के आधार पर खुदाई करने पर एक जिनमंदिर निकला जिसमें 13 प्रतिमायें थीं। यहाँ सरोवर में भगवान पार्ष्वनाथ का भव्य समोषरण भी बनाया गया है। नैनागिरी नाम के सम्बन्ध में तीन कथायें प्रचलित हैं। पहली भगवान पार्ष्वनाथ का अनुपम रूप देखकर देह के रूप का घमंड करने वालों के नैन (आंखें) षर्म से नीचे झुक गईं। इसलिये नाम नैनागिरी नाम हुआ। दूसरा – भगवान पार्ष्वनाथ के अतिषय रूप को अनेक जीवों की आंखों में आंसू आ गये। जिससे नैनागिरी नाम पड़ा। रेषंदी नाम के पहाड़ के बीच में स्थित होने से इसका नाम रेंषदीगिरी है। नैनागिरी से द्रोणगिरी 80 किमी, पपौराजी 102 किमी, अहारजी 115 किमी, कुण्डलपुर 120 किमी, खजुराहो 168 किमी की दूरी पर स्थित हैं। नैनागिरी में आवास और भोजन की समुचित व्यवस्था है।

एक फूल यूं बोला

एक फूल यूं बोला।
अपने दुःख को यूं खोला।
मुझको कभी न तोड़ो ना।
पत्ती टहनी मोड़ो ना।
हम भी तो इक जीव हैं।
जैसे भी तुम एक जीव हो।।

1. **Namokar Jaisa Mantra Nahi. Vitragi Jaise Dev Nahi, AHINSA Jaisa Dharma Nahi, Aur Jain Dharma Jaisa Koi Dharma Nahi.**
2. **Who Is Jain ?**

   J :- Jai Jinendra Jiski Juban Par Ho.

   A:- Arihanton Ko Roj Namaskar Kare,

   I:- Is Jivan Me Jo Hinsa Na Kare.

   N :- Navkar Jiska Mantra Ho.

शरीर की सुन्दरता के लिये
मनुष्य पर्याय खराब करते लोग

देह की सुन्दर दिखाने के चक्कर में महिलायें आज षरीर की गुलाम बन गई हैं। श्रृंगार नारी का आभूङ्गण है। अधिक श्रृंगार के लिये जीवन का महत्वपूर्ण समय खराब करना मूर्खता है।

टी.वी. और फिल्मों में दिखने वालीं अभिनेत्रियों की सुन्दरता देखकर सामान्य परिवारों की लड़कियां उन जैसा बनने के सपने देखने लगती हैं। इन लड़कियों का पता होना चाहिये कि उन्हें अपना षरीर को सुन्दर बनाये रखने की कितनी कीमत चुकाना पड़ती है। उनके पास सर्वसुविधायें हैं। हमारे पास सुविधायें तो हैं नहीं और सपने आसमान छूने के और जैन दर्षन के अकाट्य सिद्धांत के अनुसार देह को अपना मानना सबसे बड़ा मिथ्यात्व है, पाप है। देह का मिलना, उसका रंग–रूप, मोटा–पतला, लम्बा–ठिगना आदि अवस्थायें नाम कर्म के उदय से होती हैं। हमारे कर्म के उदय में देह का जैसा परिणमन होना निष्चित है उसे टालने इन्द्र भी समर्थ नहीं है। देह का परिणमन स्वाधीन है। हम देह को सुन्दर बनाये रखने के लिये जो उपाय करते हैं और यदि उस नाम कर्म का उदय अनुकूल हो तो हमारी इच्छा के अनुसार कार्य हो जाता है।

54 वर्षीय प्रसिद्ध पॉप गायिका मैडोना अपनी सुन्दरता बनाये रखने के लिये अपने खान–पान का विषेष ध्यान रखती हैं। वे अपना मैक्रोबायोटिक भोजन बनाने के लिये अपना रसोईया साथ लेकर चलती हैं। विमान में जाते समय रसोईये की विषेष सीट रिजर्व कराती हैं।

अमेरिकी अभिनेत्री जूलिया रॉबर्टस अपने सौन्दर्य को निखारने के लिये कई बार अपने चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी कराई है।

अमेरिका की एक मॉडल षाइना हर्षले ने अपनी सुन्दरता बनाये रखने के लिये अपने षरीर की 30 बार सर्जरी करवाई। जब वह इकतीसवीं बार सर्जरी कराने पहुँची तो डॉक्टर ने जान का खतरा बताते हुये मना कर दिया।

इसी तरह अर्जेन्टीना की एक मॉडल की बार–बार सर्जरी करवाने के कारण मृत्यु हो गई।

हाई हील के जूते पहनना प्राकृतिक रूप से षरीर के साथ खतरा लेना है। डाक्टरों का कहना है कि पैरों में प्राकृतिक रूप से तैयार होने वाला द्रव जो पैरों के मांसपेषियों के लिये कुषन का काम करते हैं, वे हील वाले जूते पहनने से वे नष्ट हो जाते हैं। अभिनेत्री कंगना रणावत को हाई हील जूते पहनने के कारण पैरों में बहुत दर्द हो गया। डॉक्टर ने उन्हें हाई हील जूते पहनने से साफ मना किया परंतु दर्द के बावजूद उन्होंने हाई हील जूते पहनना बंद नहीं किया उन्हें लगता था कि उनकी हाईट कम दिखेगी।

डांस के सुपर स्टार माइकल जैक्सन ने अपने जीवन में अपने चेहरे की कई बार सर्जरी कराई जिससे उसे अनेक बीमारियॉ हो गईं।

भारत में बॉलीवुड अभिनेत्री सेलिना जेटली, षिल्पा षेट्टी, श्रीदेवी, कोयना मित्रा ने अपने चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी करवाई है। सेलिना जेटली को सर्जरी के कारण अनेक तरह की समस्यायें पैदा हो गईं थीं। कहीं यह नकली सुन्दरता आपके स्वास्थ्य के लिये अभिशाप तो नहीं.....

बिना विवेक की नकल

एक किसान की दो पुत्रियां थी। एक पुत्री का विवाह गांव से बहुत दूर हुआ और विवाह के एक वर्ष बाद ही उसके पति का स्वर्गवास हो गया और दूसरी का विवाह गांव में ही हुआ था। इन दोनों में अत्यन्त प्रेम था।

एक बार छोटी बहिन सुनयना अपनी विधवा बहिन लीला से मिलने गई। लीला ने सुनयना के स्वागत में बड़े हर्ष के साथ भोजन कराया। मिठाई के साथ ही पूरन – पुड़ी भी बनाई, उन्हें खाकर छोटी बहिन बड़ी प्रसन्न हुई व उसके बनाने की विधि भी दीदी से समझ ली।

कुछ दिन बड़ी बहन के यहाँ रहकर वह घर वापिस आ गई। एक दिन अपने पति से बोली आज षाम को भोजन में आपके लिये नई चीज बनाऊँगी। उसने पूरन – पुड़ी बनाने को सब सामान मंगाया और बनाने लगी परन्तु वे न बन सकीं। क्योंकि उसके बनाने की विधि में कुछ भूल हो रही थी। उसने अपनी बहन को फोन करके पुनः विधि पूछी तो बहिन ने कहा जैसा मैंने किया वैसा ही करोगी तो पूरन पुड़ी अवष्य बनेगी। फिर सुनयना ने सोचा कि बहिन लीला ने जब पूरन पुड़ी बनाई थी तब वे सफेद साड़ी पहिने हुये थीं और बाल भी कटे हुये थे, उनके हाथों में एक भी आभूषण नहीं थी। अतः मुझे भी वैसा ही करके पूड़ियां बनाना चाहिये। उसने तुरन्त ही अपने सर के बाल काट लिये, सफेद साडी भी पहिन ली व हाथों में पहिने हुए आभूषण उतार दिये और फिर से पुड़ियों को बनाना आरंभ किया, फिर भी पूड़ियां सही नहीं बनीं, वे अच्छी बनती भी कैसे ? विधि ही सही नहीं थी ।

षाम को जब पतिदेव भोजन करने आये तो उन्होंने पत्नी की हालत को देखा और क्रोध से लाल होकर बोले –

अरी मूर्ख ! मेरे होते हुए तू विधवा क्यों हो रही है ? लीला बोली – मेरी बहिन ने तो इसी भेष में पूरन पूड़ी बनाई थीं, जो अति स्वादिष्ट बनी थीं।

पति ने कहा – पगली ! भेष बदलने से पूड़ियां बनने का क्या सम्बन्ध ? तू तो वैसा ही कर रही है कि जैसे कुछ लोग सम्यग्दर्षन पाने के लिये देखा – देखी षरीर के माध्यम से बाह्म क्रियाकांड की नकल करते हैं।

किन्तु सम्यग्दर्षन का सच्चा उपाय तत्वज्ञान व तत्वनिर्णय है उसे भली भांति समझने का यत्न नहीं करते। सच्चा उपाय तो तत्वज्ञान और स्वाध्याय द्वारा राग–द्वेषादि भावों में समानता व आत्मा में अपनापन है– इसके बिना धर्म की प्राप्ति कैसे संभव है ? तत्वज्ञान के बिना कितने ही भेष बदलो, उससे अनंत संसार का एक दिन भी कम होना संभव नहीं है। पत्नी आष्चर्य से अपने पति का मुख देख रही थी।

बिलकुल ठीक

प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन अपने षोध कार्य में मगन थे, इतने में उनकी पत्नी आई और उनसे गुस्से में कहा – आपका नया नौकर बिलकुल मूर्ख है। आइंस्टीन ने कहा– बिलकुल ठीक। इतने में नौकर आया और उसने भी आइंस्टीन से षिकायत की कि मालिक ! आपकी पत्नी बडा रूखा व्यवहार करतीं हैं। उनने कहा बिलकुल ठीक। पत्नी यह सब कुछ सुन रही थी, तब उसने चिल्लाकर कहा – आपके नौकर की यह हिम्मत कि मेरी बुराई करे। आइंस्टीन ने कहा – बिलकुल ठीक । यह उत्तर सुनकर पत्नी और नौकर एक दूसरे को देखकर अपनी हँसी को रोक नहीं सके और चुपचाप वहाँ से चले गये। ऐसी होती है लगन।

धार्मिक व पारिवारिक आयोजनों में वितरण के लिये सर्वोत्तम उपहार धार्मिक वीडियो सी.डी.

प्रस्तुति - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन रजि. जबलपुर म.प्र.

जैनी बच्चे सच्चे हम.
हम होंगे ज्ञानवान
मेरा वीर बनेगा बेटा
कर लो जिनवर की पूजन
जिन धर्म की कहानियाँ
तोता तू क्यों रोता

छहढाला की वीडियो प्रस्तुति
गाथा महापुराण की

धार्मिक बाल कविताओं
नन्हें-मुन्ने गायक हम
धार्मिक कविताओं की पुस्तक एवं सीडी

धार्मिक गेम
मुक्ति सोपान

संपर्क करें - 9373294684

सिद्धक्षेत्र गजपंथा में युवा शिक्षण शिविर संपन्न

सिद्धक्षेत्र गजपंथा की तलहटी में स्थित भव्य जिनालय के प्रांगण में 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक युवा षिक्षण षिविर संपन्न हुआ। श्री राजेन्द्रभाई गांधी, घाटकोपर के मुख्य सहयोग से आयोजित इस षिविर में 52 बालकों ने भाग लिया। इस षिविर में पं. विराग षास्त्री देवलाली, श्री विकास छाबड़ा इंदौर, श्री सचिन षास्त्री बांसवाड़ा ने द्रव्य गुण पर्याय, देव षास्त्र गुरू, सामान्य श्रावकाचार, पूजन की पद्धति, भक्ति कैसे करें आदि विषयों पर रोचक विधि से अध्ययन कराया। पं. श्री नीलेष षाह, मुम्बई ने कार्यकर्ताओं की कक्षा ली। इस षिविर में नये प्रयोगों से अध्ययन कराया गया। षिविर में श्री महेन्द्र षास्त्री, श्री सतीष षास्त्री का विषेष सहयोग प्राप्त हुआ। समस्त कार्यक्रम ब्र.धन्य कुमार जी बेलोकर के निर्देषन में श्री पूनमभाई षाह, श्री रतिभाई षाह, सौरभ बेलोकर के सहयोग से संपन्न हुये।

मंगलायतन विश्वविद्यालय में पंचकल्याणक महोत्सव संपन्न

अलीगढ़ में स्थित मंगलायतन विष्वविद्यालय में नवनिर्मित श्री आदिनाथ भगवान के अलौकिक जिनालय का ऐतिहासिक पंचकल्याणक महोत्सव 16 दिसम्बर से 23 दिसम्बर तक संपन्न हो गया। इस महोत्सव में चहकती चेतना के 80 सदस्य बने और श्री विनोदभाई षाह अमेरिका हस्ते श्री षैलेष भाई षाह कोचीन और श्री जसवंतभाई बड़ौदरा के सहयोग से बाल गीत–कहानी वीडियो सी.डी. समाज को लागत से कम मूल्य में उपलब्ध कराईं गईं।

देहावसान

इंदौर के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व एवं विद्वान पं. श्री क्रान्तिकुमार पाटनी का 68 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपने जिनधर्म के प्रचार – प्रसार में सदैव योगदान दिया। इस षोक के प्रसंग पर परिवार की ओर से 500/– रू. की राषि संस्था को प्राप्त हुई है। संस्था परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति षीघ्र निर्वाण की कामना व्यक्त करता है।

देश में सर्वोदय अहिंसा अभियान की धूम

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई के पूर्ण सहयोग से अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेषन द्वारा दीपावली पर पटाखों से होने वाली हिंसा के विरोध में तथा मकर संक्रान्ति के अवसर पर पंतग के धागे से दुर्घटनाओं से घायल तथा मरने वाले पक्षियों के प्रति संवेदनायें जाग्रत करने की भावना से सर्वोदय अहिंसा अभियान का संचालन किया गया। इसके अंतर्गत दोनों अवसर पर दो विषाल रंगीन पोस्टर प्रकाषित किये गये । जिसमें पटाखों से और पतंग के धागे से होने वाले नुकसान की जानकारी सचित्र प्रकाषित की गई। ये पोस्टर हजारों की संख्या में प्रकाषित करके देष के अनेक स्थानों पर भेजे गये। जिसके फलस्वरूप हजारों बच्चों ने पटाखे न फोड़ने का और साथ ही पतंग न उड़ाने का संकल्प लिया। इन दोनों अभियान को श्री संजय षास्त्री, जयपुर के संयोजकत्व में तथा श्री विराग षास्त्री के निर्देषन संचालित किया गया।

तीर्थंकर स्टीकर गेम का विमोचन

आचार्य कुन्द कुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर द्वारा बाल वर्ग में जिन धर्म के संस्कार समाहित करने के उद्देश्य से अनेक प्रयास किये जा रहे है इसके अंतर्गत अभी तक नौ वीडियो सी.डी. एवं एक धार्मिक गेम का निर्माण किया जा चुका है । इसके आगामी क्रम में बच्चों को उपहार स्वरूप तीर्थंकर स्टीकर गेम का प्रकाशन किया गया है । इसमें नये प्रयोग करते हुये बच्चों को रोचक विधि से तीर्थंकर, उनके नाम एवं उनके चिन्हों का ज्ञान कराया गया है साथ ही अरहंत प्रभु के प्रातिहार्य एवं मुनिराजों से संबंधित जानकारी दी गई है । इसका विमोचन जबलपुर के जिनमंदिर की 11वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित रत्नत्रय मंडल विधान के अवसर पर बाल ब्रम्हचारी सुमतप्रकाश जी एवं पं. राजेन्द्र कुमार जी के द्वारा किया गया । उपस्थित समाज ने इसे अत्यंत रोचक एवं उपयोगी बताया इस गेम की परिकल्पना एवं संयोजन श्री विराग शास्त्री द्वारा किया गया है । इस स्टीकर गेम को प्राप्त करने के लिये आप 9423212084 पर संपर्क कर सकते है

पाठकगण विशेष ध्यान दें

बाल त्रैमासिक पत्रिका चहकती चेतना के इस अंक को नये रूप में प्रस्तुत किया है इसका आगामी अंक पूर्व की भांति पुस्तक के रूप में प्रकाशित होगा ।

जिन सदस्यों की सदस्यता अवधि पूर्ण हो गई है उन्हें चहकती चेतना पत्रिका नहीं भेजी जायेगी अतः सदस्यता जारी रखने के लिये 400/– की राशि आप मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें ।

सदस्यता राशि आप हमारे पंजाब नेशनल बैंक के बचत खाता क्रमांक 1937000101030106 में जमा करके उसकी सूचना हमें दे सकते हैं ।

प्रथम अभयदान

चीनी भाषा में लिखित एक महान बौद्ध ग्रंथ जापानी भाषा में उपलब्ध नहीं था। उसे जापानी में उपलब्ध कराने की तेत्सुगेन को तीव्र इच्छा हुई। उसने तय किया कि लकड़ी पर हाथों से अक्षर–अक्षर कुरेदकर ग्रंथ उकेरा जाए और फिर उसे स्याही लगाकर हजारों प्रतियां निकाली जाएं। इस काम के लिए काफी पैसा चाहिए था। तेत्सुगेन ने गांव–गांव घूमकर दस वर्षों में पर्याप्त बड़ी राषि एकत्र कर ली। उन पैसों से लकड़ी व औजार खरीदना, फिर ठप्पे तैयार करना – यह काम अभी षुरू करना था।

ठीक इसी वक्त ऊजी नदी में बाढ़ आने और ओला वृष्टि होने से नगर में अकाल पड़ गया। तेत्सुगेन ने जमा किये हुये सभी पैसों से चावल खरीद कर अकालग्रस्त लोगों में बांट दिये। ग्रंथ छापने के लिए दोबारा रूपये इकट्ठा करने में फिर से 10 वर्ष लग गए।

इसी बीच देष में महामारी फैल गई। हजारों परिवार असहाय हो गए, तेत्सुगेन ने फिर से जमा हुए सारे रूपये गरीब लोगों में बांट दिए। ग्रंथ छापने का काम तो करना ही था, महामारी का प्रकोप खत्म होने के बाद वह नये सिरे से दान एकत्रित करने की धुन में गांव–गांव घूमता रहा।

40 वर्ष बाद आखिर तेत्सुगेन की इच्छा पूरी हुई। एक मित्र ने कहा – जो काम तुम 10 वर्ष में कर सकते थे, उसमें 40 साल लगा दिये। तेत्सुगेन ने कहा – यदि मैं पहले ग्रन्थ छाप लेता तो मैं मानवता की सेवा से वंचित रह जाता।

हाथी दादा कहाँ चले।
सूंड़ हिलाकर कहाँ चले।
मेरे घर भी आओ ना ।
हलुआ पूरी खाओ ना।

आज मैं ना आऊँगा।
ना हलुआ पूरी खाऊँगा।
मंदिर में पूजा पाठ है।
और मेरा उपवास है।।

गेम

रास्ता खोजिये जिन मंदिर तक पहुँचिये।

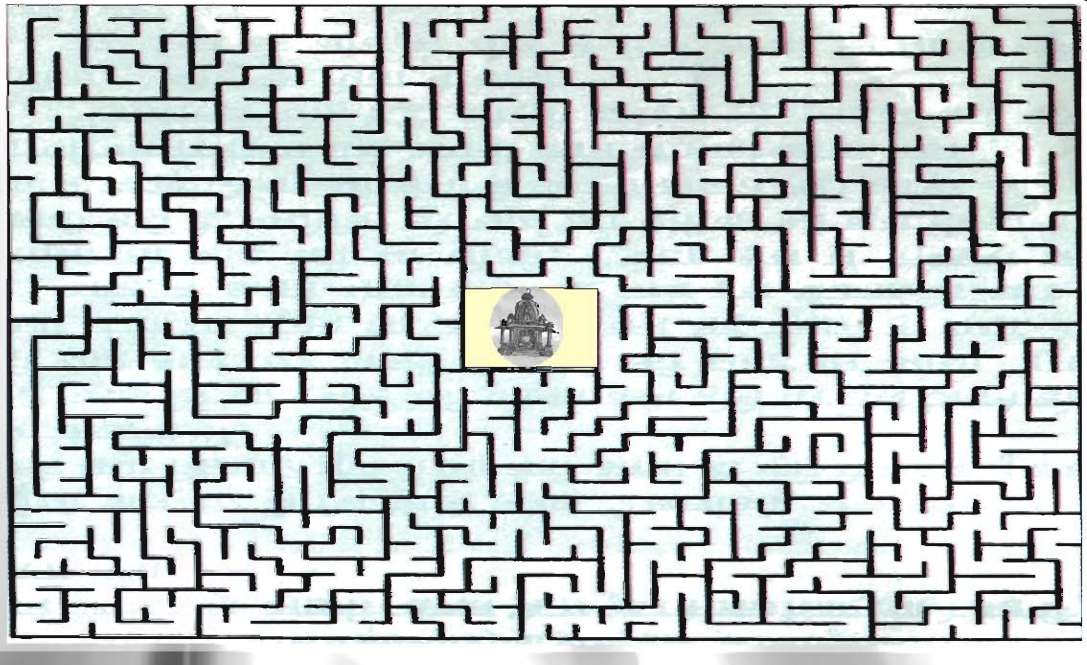

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

Calender 2011

JANUARY

S	M	T	W	T	F	S
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

FEBRUARY

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28					

MARCH

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

APRIL

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

MAY

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

JUNE

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

JULY

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

AUGUST

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

SEPTEMBER

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

OCTOBER

S	M	T	W	T	F	S
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

NOVEMBER

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

DECEMBER

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

बाल संस्कारों को प्रवाहित करने वाली संपूर्ण जैन जगत की एकमात्र बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

आज ही सदस्य बनें

सदस्यता शुल्क - 400 रु. तीन वर्ष हेतु

प्रकाशक - श्रीमती सूरजबेन अमुलख राय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संपर्क सूत्र

बंगला नं. 50, कहान नगर सोसायटी, लाम रोड, कहान नगर, पो. देवलाली जि .नासिक 422401 महा.
मो. 9373294684, 9423212084, 9300642434 Email. chehaktichetna@yahoo.com